भगवत् कृपा

THE DIVINE GRACE

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली मासिक सत्संगपत्रिका

वर्ष-16, अंक-11 शुक्रवार, 26 नवं.' 93	सम्पादक : साधु मुकुंदजीवनदास गुरु ज्ञानजीवनदासजी नवम्बर, 1993	वार्षिक चन्दा-30.00 प्रति अंक : 3.00

अमृतसेतु

[हम सब के प्यारे प्रभु प.पू. काकाजी का अमृत महोत्सव (75वीं जन्म जयंती) का महामंगलकारी वर्ष–'1993' चल रहा है.... हमारे भाग्य का तो पार नहीं कि रोम-रोम में भगवान प्रकटाये परम पवित्र पुरुष गरजू बनकर हमारे जीवन में आ गये....हमें अपनी गोद दी और उनके संग जीवन जीये !!...कैसे ऋण चुका भी पायेंगे इनका?

पू. काकाजी के निम्नलिखित दो आंशिक पत्रों से ही स्पष्ट होता है कि हमें कैसी भव्य प्राप्ति हुई है....और इनके संबंध में आने के बाद हमें क्या करना है? और इससे भी अधिक–कैसी कल्पना से परे की प्रीति होगी हम सबसे उनकी? कितना अपना माना होगा हमें–जो ऐसा सचोट व स्पष्ट मार्गदर्शन हमारे लिए खुला रख दिया कि आज भी यदि करने लग जायें तो परम सुखी हो जायें व देह रहते हुए अक्षरधाम का सुख-शांति, आनंद प्राप्त करें.....

आईये, हम सब मिलकर इस रहस्य का मनन चिंतन करके समझने का प्रयास करें। इन वाक्यों को अपने जीवन का आधार बना लें ताकि 'अमृत महोत्सव' तक में प्रत्यक्ष गुणातीत स्वरूपों हमारी सब कसर टाल कर हमारी साधना की पूर्णाहुति करा देवें....यही अंतर की आरजु.....]

▭.....मुझे तो
पू.बापा ने अनुपम ही पसंदगी में चुना था,
सो,
सर्वांगी विकास में और सर्वोच्च ब्रह्मीस्थिति में
तकलीफें बाधारूप नहीं बनी
और
मूल रहस्यों गौण नहीं हुए–
अक्षरपुरुषोत्तम उपासना
व
जीव को ब्रह्मरूप करके परब्रह्म में जोड़ने के मूल उद्देश्य में सहज स्थिति व सिद्धि पू. बापा ने दे दी.....
जिससे
सभी भूमिकाओं में अखंड शांति और आनंद रहा....

स्वीट्जरलैंड, 15-7-'77

▭ ▭ ▭

❑ **गुरु** बहुत होते हैं,
परन्तु
❑❑ **सद्गुरु** कम।
और
सच्चा सद्गुरु तो शायद ही मिले
और
मिल भी जाये तो–
उसके जोग में रहना कठिन।
यदि रहें भी, तो–
अखंड दिव्यभाव रखना कठिन।
वह भी रखें तो–
स्वभाव टाल कर टिकना कठिन।
वह भी कर लें तो–
उसकी अनुवृत्ति में रहना कठिन।
वह भी हो जाये, तो–
उसके अभिप्राय की भक्ति करनी कठिन।
और
वह भी हो, पर–
भिन्न-भिन्न प्रकार के–भिन्न रुचि वाले मुक्तों के साथ
दिव्यभाव ही रखकर–साधुता रखकर
सरलता वर्तना–सर्वोत्तम स्थिति है।
और तब–
पूर्णता ही प्रगटे
और
Final stage सिद्ध हुई मानी जाये।
तो,
यह **एकता व समता** दृढ़ करते जाना।
दूसरा क्या कर रहा है?
वह
जरा भी नज़र में नहीं लेना।
हमें
प्रभु को याद करके
उन्हें ही सब करने देना है।

शिकागो, 12-5-'-'77

–प.पू. काकाजी महाराज

❑ शब्द द्वारा परमात्मा के स्वरूप के ज्ञान का उपदेश करे वह **गुरु**।
❑❑ सभी में परमात्मा का दर्शन कराये वह **सद्गुरु**।

ब्रह्मप्रवाह

एकांतिक का गणित

अवतारों के अवतारी, कारणों के कारण अपार ऐश्वर्यों, शक्तियों, गुणों, महिमा से युक्त श्रीजी महाराज सामान्य मनुष्यरूप में केवल करुणा करके जीवों के कल्याण के लिए ही, मूल अज्ञान कारण शरीर टालने के लिए भरतखंड में विचरे। लेकिन मुमुक्षुओं ने उन्हें वे जैसे थे वैसे पहचाने नहीं और सर्वोपरि उपासना तथा लोया-12 के मुताबिक का अति उत्तम निर्विकल्प निश्चय सिद्ध नहीं कर सके। भगवान का साक्षात्कार प्रत्यक्षपन होने के बावजूद देह रहते हुए ही ब्रह्मीस्थिति प्राप्त करके धाम का सुख अनुभव कर सके नहीं। सामान्यधर्म, ज्ञान, वैराग्य और भक्ति से युक्त एकांतिक धर्म संत के आसरे रहा और वरताल 11 तथा 5-3 के मुताबिक सच्चे वड़वानल सर्वोपरि सत्पुरुष द्वारा ही मोक्ष का द्वार खुल्ला रखा। साधुरूप—जो कि स्वयं का मूल स्वरूप है, जिसने माया का अनादि कपट काटा है और जो केवल अखंड गुणातीत स्वरूप में ही वर्तता है, वैसा पंचाला के-7 के मुताबिक साधु स्वरूप मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामी द्वारा एकांतिक धर्म का—माहात्म्य ज्ञान युक्त एकांतिक भक्ति का—देह रहते हुए ही जीवनमुक्त, स्थितप्रज्ञ, ब्रह्मस्वरूप बनकर परब्रह्म पूर्ण पुरुषोत्तम नारायण—केवल एक एवं अद्वितीय सहजानन्दस्वामी में प्रगटरूप से जुड़ जाने का जूनागढ़ देश तथा गोपाळानन्दस्वामी के अनेक शिष्यों—मुक्तों द्वारा सिद्ध करके बताया। निष्कुलानंदस्वामी ने भी ''संत वह स्वयं हरि'' गाकर सौ जन्म की कसर उनके एकांतिक संत के प्रगट-प्रत्यक्ष समागम से दूर हो सकती है यह कई जगह साफ-साफ कह दिया। इस बात को सभी को सत्पुरुष द्वारा ही समझ लेना चाहिए, तभी स्थिति हो सकती है। यही स्वामिश्रीजी का सिद्धान्त और अन्तर का रहस्य है। देखो मध्य 50-51 59-63, अत्यं, 2-7-11-21-38-39, प्र.27, वरताल 11-5 प्र-37। वरताल-19 और 10 के मुताबिक ऐसे वड़वानल अग्निसमान सत्पुरुष पृथ्वी पर भरतखंड में जरूर विचरते होते ही हैं। उनकी पहचान वही परमपद, परमप्राप्ति और परम-कल्याण और मर कर जिन्हें पाना था थे देह रहते हुए ही अत्यं, 2 के मुताबिक गुरुहरि के रुप में प्राप्त हुए !

एकांतिक धर्म एकांतिक सत्पुरुष द्वारा ही पाया जाता है। महाराज को मिले सब हैं लेकिन कसर रह गई, वासनाएँ रह गई व कल्पना एवं संकल्प टले नहीं। बड़े चैतन्यानन्दस्वामी सच्चे साधु के संग चौबीस वर्ष के बाद सच्चा सत्संगी हुआ और अखंड मूर्ति देखने वाले भी प्राकृत भाव में मालूम पड़े हैं। सो, अमदावाद 2-3-7 तथा मध्य 30-45 तथा प्र.23-21, अत्यं, 38-39 के मुताबिक सच्चे सत्पुरुष द्वारा ही साक्षात्कार की स्थिति प्राप्त होती है और अत्यं 28-11 के मुताबिक भगवान के सुख का अनुभव होता है, भोगा जाता है और अखंड प्राप्त होता है। मूर्तियों तथा प्रतिमाओं की पूजा व मानसी से भी अधिक ऐसे अत्यं, 26 तथा प्र.27 के मुताबिक गुणों तथा लक्षणों वाले सच्चे संत में भगवान सभी प्रकार से निवास करके दिव्य स्वरूप से अखंड रहते हैं और उनके द्वारा सर्वोपरि

सुख, आनन्द और परम शांति मिलती है। यही पर मोक्ष है यूँ महाराज ने वचनामृतों में अनेक जगह पर कहा है। भगवत्स्वरूप हुए साधु को ही महाराज ने प्रतिपादित किया है। एकांतिक का यह गणित, सत्पुरुष–सिद्धपुरुष जो अन्तर पकड़े, स्वभाव बदले और देह रहते हुए ही संकल्प, विकार टाले उसके द्वारा ही सीख कर साक्षात्कार की स्थिति और भगवान का सुख हरेक सत्संगी को प्राप्त कर लेना चाहिए।

''एक रति के बिना एक रतिको''–केवल सहजानन्दस्वामी एक ही सर्वोपरि भगवान है। अक्षर के दो स्वरूप हैं। जिसमें मूल स्वरूप पंचाला-7 के मुताबिक गुणातीत है और महाराज उसे ही वश हैं। उनसे पलक झपकने तक भी दूर नहीं रहते और प्र.63 के मुताबिक अक्षरधाम के इस मूर्तिमान स्वरूप में ही अखंड दिव्य रूप से रहकर ही अन्यत्र अनन्त कला से महाराज दिखाई पड़ते हैं और खेलते हैं। भक्त की कल्पना, श्रद्धा, भावना तथा आसरे के मुताबिक सुख और शांति, प्रकाश और आनन्द देते हैं। एक ही अद्वितीय सहजानन्दस्वामी, भरतखंड में ऐसे परम एकांतिक संत द्वारा अखंड प्रगट विचरता हो उसे पहचानना वही परम कल्याण है क्योंकि उसके द्वारा ही महाराज का सुख मिलता है। प्रगट हुए अखंड महाराज को सर्व प्रकार से धारण करके रखे हुए संत-साधु ही प्रगटे हुए पुरुषोत्तमरूप से सभी के अन्तर पकड़कर, स्वभाव टालकर देह रहते हुए ही धाम का सुख देकर परम एकांतिक स्वरूपों को तैयार करता है। ऐसी गुणातीत ज्ञान की कॉलेज फिलहाल प.पू. शास्त्रीजी महाराज द्वारा गोंडल के प्र.ब्र. योगीजी महाराज चला रहे हैं।

पू. भगतजी महाराज, पू. जागास्वामी, पू. कृष्णजी अदा द्वारा सबीज गुणातीत ज्ञान का जो डंका सब जगह बज रहा है वह अक्षरपुरुषोत्तम की निष्ठा ही सर्वोपरि है, सत्य है, श्रेष्ठ है और उसका ही जय जयकार चारों ओर फैल रहा है। सम्प्रदाय में इस बात को तटस्थरूप से सभी को विचार कर लेना जरूरी है। इसके लिए निम्न एकांतिक का गणित साक्षात् प्रतीतिरूप में बताया है वह विचार कर लेना।

उदाहरण पहलाः-भगवान या भगवान का स्वरूप, संत या साधु, मूल ब्रह्म या परब्रह्म के समान एक्या रखता है। ब्राह्मीस्थिति वाला ही ब्राह्मीस्थिति वाले को तथा महाराज को पहचान सकता है। देखो वरताल-11 अब नीचे की ऐक्यता–

मध्य 8 का प्रश्न–परमपद वह क्या? महाराज ने उत्तर दिया है कि **प्रत्यक्ष भगवान की प्राप्ति** वही परमपद और वही ज्ञान यज्ञ की पूर्णाहुति। अब देखो अंत्य-2, मध्य 10-14।

''जैसी परोक्ष देव के प्रति जीव को प्रतीति है, वैसी यदि प्रत्यक्ष गुरुरूप हरि के प्रति आए तो जितने अर्थ प्राप्त होने कहे हैं वे सभी अर्थ उसे प्राप्त होते हैं।'' और जब ऐसा **संत समागम प्राप्त** हो तब **देह छोड़कर** जिसे पाना था वह तो देह रहते हुए मिले हैं। इसलिए जिसे **परमपद कहते हैं, मोक्ष कहते हैं** उसे देह रहते हुए ही पाया। ये बातें बहुत बारीक हैं। उसे जो ऐसे वर्तता होगा उसे यह समझ में आए। अपने को अधिक स्याने समझने वाले कई ऐसा अर्थ करते हैं कि यह तो महाराज हाजिर थे तब स्वयं के लिए ही कहा है। लेकिन जो ब्रह्मस्वरूप में वर्तते हैं वही सच्चा रहस्य जानते हैं कि यह झूठा अर्थ है। क्योंकि महाराज 49 वर्ष ही नहीं रहे, वे तो अखंड हैं,अजन्मे हैं, अविनाशी हैं और साधु द्वारा,

संत द्वारा प्रगट ही विचर रहे हैं। 49 वर्ष की हाजरी के बाद क्या ऐसी प्राप्ति किसी को भी होनी नहीं? देखो मू.अ.मू. गुणातीतानन्दस्वामी की प्रकरण पाँच की 414वीं बात जिसमें साधु द्वारा भगवान को प्रगट कहा है। इसलिए अपना सयानापन छोड़कर सिद्ध पुरुषों, ब्रह्मस्वरूप सत्पुरुषों के वचन में शंका नहीं लाकर श्रद्धा और विश्वास से मनन करके, गहराई में उतरकर सोचकर ही निर्णय करना। सत्य हमेशा गहरा और मर्म वाला रहस्यपूर्ण ही होता है। उसमें मिलावट चलती नहीं और सत्य के बिना, सत्पुरुष के बिना व.11 के मुताबिक एकांतिक का अनुभव और दर्शन व स्थिति भी संभव नहीं। तो हल मिलेगा कहाँ से? इसलिए यह गणित ही जवाब मिला देता है और स्थिति कराता है व अनुभव सिद्ध है और देह रहते हुए ही प्राप्त है। इसलिए सच्चा है, श्रेष्ठ है और सर्वोत्तम है इसमें शंका का स्थान नहीं।

चाबीः-परमपद=प्रत्यक्ष महाराज की प्राप्ति और ज्ञानयज्ञ की पूर्णाहुति का फल। मध्य 8 सच्चा वड़वानल अग्नि समान सत्पुरुष का संत समागम=परमपद परममोक्ष और (अत्यं. 2 वरताल 11) मध्य 59 के मुताबिक परम कल्याण।

इसलिए प्रत्यक्ष स्वरूप के सम्बन्ध सहित दिव्य दृष्टि वह पराभक्ति है, वही परमपद है। मध्य 10.

उदाहरण दूसराः-इंद्रियरूप जो (मनोमय चक्र)–

सारंगपुर 7–मन की धारा जिस जगह पर घिसकर मोथरी हो जाए उसे नैमिशारण्य क्षेत्र जानना। वहाँ भगवान का एकांतिक साधु रहता ही होता है। मनोमय चक्र की इंद्रियोंरूप धारा मोथरी हो जाए तब शब्द, स्पर्श, रूप, रस और गंध इन विषयों में प्रीति रहे नहीं। इसलिए मन की धारा मोथरी हो जाए वहाँ ही=नैमिशारण्य क्षेत्र में एकांतिक साधु रहता होता है वहाँ ही हो सकता है। अब देखो–

प्र.13ः–मनोमय चक्र की जो धारा वह तो इंद्रियाँ हैं, **वह अब ब्रह्म और उससे पर जो परब्रह्म उसका साक्षात्** दर्शन होता है=तभी मनोमय चक्र की धाराएँ मोथरी होती हैं और उसे कोई लोक विषय सुख में आनन्द होता ही नहीं।

चाबीः–जहाँ वड़वानल अग्नि समान सत्पुरुष हो वहीं नैमिशारण्य क्षेत्र है और वहीं मन की धारा मोथरी होती है, वृत्तियाँ पीछे हटती हैं और स्वभाव बदलता है और वृत्ति से प्रकृति बदलती है। महाराज के ही शब्द हैं कि इंद्रियों की धारा तभी मोथरी होती है जब ब्रह्म और उससे पर जो परब्रह्म उसका साक्षात् दर्शन होता है। इसलिए धाराएँ यदि कुंठित हुई तो उस समूह में जरूर एक और अद्वितीय परब्रह्म का साक्षात् स्वरूप साधुरूप में विचरता ही होता है। क्योंकि उसके दर्शन बिना मन की धारा मोथरी होती ही नहीं यूँ महाराज कहते हैं। ऐसा सर्वोपरि स्वरूप एक ही होता है और वह अन्तर पकड़कर स्वभाव को बदलता है। असुर जैसों की भी–भाषा भी न जानते हों ऐसों को भी दृष्टि से, वृत्ति से, आकाशवाणी से स्वयं में खींच ले–लीन कर दे तभी मानना कि महाराज के ही वचनामृतों के अनुरूप यह प्रगटे हुए परब्रह्म का साक्षात् ही दर्शन हैं।.....

–प.पू. काकाजी महाराज

फरवरी, 1954

❋ ❋ ❋ ❋

स्वामी की बातें

317. शिवजी के गले में रहकर साँप गरुड़ के सामने फुंकार मारने लगा, तब गरुड़ ने कहा कि यह तेरी ताकत नहीं, बल्कि शिवजी का बल है; सो मेरा जोर चलता नहीं। इसी प्रकार हम पर दुःख आए तो भगवान तथा साधु से चिपट जाना, जिससे काल, कर्म, माया किसी का बल चले नहीं। *प्र–5,60*

318. जिसे भगवान भजने हो उससे सभी की मर्जी नहीं संभाली जायेगी, उससे तो भगवान की मर्जी ही संभाली जा सकती है। *प्र–5,62*

319. भगवान के एकांतिक साधु जिसके घर भिक्षा माँगने जाये, उसका घर तीर्थरूप हो जाता है और सभी तीर्थ हो आने का उसे फल मिलता है व उसी समय यदि उसका देह छूट जाये तो भगवान के धाम को पाता है, ऐसा माहात्म्य है। उस भगवान को हमने पाया, सो हम स्वयं ही तीर्थरूप हो गये हैं..... *प्र–5,63*

320. साधु का द्रोह यूं समझना कि सबसे बड़े साधु हों उन्हें दूसरों जैसा कहना या उनसे उतरते कहना–ऐसा कहने से साधु का द्रोह होता है। जैसी बातें आज समझते हैं वैसी कभी समझ में नहीं आई। आज तो भगवान हैं, साधु है, सभी यहीं है। उसके स्वरूप का प्रभाव समझ नहीं पाते वही बड़ा पाप है। फिलहाल तो भगवान अक्षरधाम सहित यहाँ है। सो यादवों जैसा नहीं बनना, उद्धवजी जैसा भक्त बनना। ऐसे के ऐसे अक्षरधाम में से आये हैं ऐसा प्रभाव अखंड रहे तो अहो ! अहो ! ही होता रहे, परन्तु साधु जैसे हैं वैसे पहचाने नहीं गए। इस प्रकार मर्म की खूब बातें की।

प्र–5,64

321. भगवान जैसे अक्षरधाम में है वैसे के वैसे ही आये हैं। उनमें बाल, यौवन और वृद्धावस्था– ऐसा मनुष्यभाव नहीं और मरना आदि भी नहीं है। मनुष्यभाव जो दिखाई पड़ता है, वह तो नट के खेल की भाँति है। *प्र–5,69*

322. गाँधारी आँखों पर पट्टी बाँध रखती थी, तब भी वह सती नहीं कहलाई और कुन्ती को कुँवारी होते हुए पुत्र हुआ था व द्रौपदी के पाँच पति थे तब भी वे सती कहलाई गईं।

प्र–5,78

323. जगत के मनुष्य की और सत्संगी की क्रिया एक जैसी ही लगेगी, परन्तु सत्संगी भगवान के कहे जाते हैं, सो मोक्ष होता है।

प्र–5,80

324. अपने सत्संग की रीत समझनी कि सत्संग में रामानन्दस्वामी, मुक्तानन्दस्वामी, नित्यानन्दस्वामी, ब्रह्मानन्दस्वामी, गोपाळानन्दस्वामी आदि कई साधु और कई हरिभक्त बड़े हो गए। उनको साथ में लेकर हमारी महिमा गाना और उनको छोड़कर यदि कहोगे तो हमारी अपकीर्ति कराओगे। और ये सब जो बड़े थे, वे मनुष्य जैसे नहीं कहे जाए। वे यदि नहीं होते तो इतना सत्संग भी हमें कहाँ से हो पाता? सो वे सब बड़े हैं।

प्र–5,82

चलो ! अक्षरधाम.....

हमारा परम सौभाग्य है कि प.पू. काकाजी महाराज के 'अमृतपर्व' का परम पवित्र महोत्सव साक्षात् गुणातीत स्वरूपों प.पू. पप्पाजी, प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी, प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी, प.पू. साहेब, प.पू. दिनकरभाई, प.पू. हरिभाई साहेब की निश्रा में 'अक्षरधाम' पवई–बम्बई में दि. 31 दिसम्बर' 93 1, 2, जनवरी' 94 को भव्यता से मनाएंगे.....आईये, आईये, आप सभी को इस महामंगलकारी अवसर पर 'अक्षरधाम' आकर दर्शन, सेवा, समागम का अमूल्य लाभ लेकर आशीर्वाद प्राप्त करने का हार्दिक निमन्त्रण है.....

❑ ❑ ❑

अमृतमहोत्सव का कार्यक्रम

❑ दि. 31-12-93, शुक्रवार

सुबह : 9-30 से 11-30	–महापूजा–यज्ञ और 'गुणातीत स्वरूप दर्शन' प्रदर्शनी का उद्घाटन
रात्री : 7.30 से 10.00	–भजन संध्या और स्वागत सभा

❑ दि. 1-1-94, शनिवार

सुबह : 9-00 से 12-00	–प.पू. काकाजी महाराज के माहात्म्यदर्शन की सभा
दोपहर : 3-00 से 5-30	–महिला सम्मेलन
शाम को : 7-30 से 10.00	–सांस्कृतिक कार्यक्रम

❑ दि. 2-1-94, रविवार

सुबह : 9-00 से 12-30	–प.पू. काकाजी महाराज के अमृत महोत्सव की मुख्य सभा तथा उसके बाद महाप्रसाद व विसर्जन

शुभ स्थल :– योगी डिवाईन सोसाईटी
अक्षरधाम, स्वामिनारायण मार्ग,
आई.आई.टी.मेन गेट के सामने
पवई, बम्बई-400076
फोन नं. 5782151, 5785907

नम्र विनती :

आपके ठहरने रहने की व्यवस्था व्यवस्थित रूप से हो सके इस हेतु आप पहले से यदि सूचना दे दें तो हमें व आपको सुविधा रहेगी।

1. आप कब, कौन-सी तारीख को और कितने मुक्तों पधारेंगे? व वापस कब जायेंगे?
2. जिनकी वापसी की बुकिंग करानी हो तो नाम, उम्र और कौन-सी तारीख का, कौन-सी ट्रेन का कराना है....उसके बारे में पहले से ही ताड़देव के पते पर सूचना दें, तो आपको सुविधा रहेगी।
3. बम्बई में यदि आप अपने रुकने-करने की व्यवस्था स्वयं कर लेने वाले हों तो उस बारे में हमें सूचना दे देना।

पत्र-व्यवहार के लिए पता

गुरुहरि काकाजी महाराज अमृतमहोत्सव समिति

1. योगी डिवाईन सोसाईटी
   6/D, सोनावाला बिल्डिंग,
   ताड़देव, बम्बई-400 007
   महाराष्ट्र

2. योगी डिवाईन सोसाईटी
   अक्षरधाम, स्वामिनारायण मार्ग,
   आई.आई.टी मेन गेट के सामने,
   पवई, बम्बई-400 076
   महाराष्ट्र

व्रतोत्सवसूची

1.	दि.	9.12.93	रविवार	एकादशी, व्रत
2.	दि.	15.12.93	बुधवार	धनुर्मास प्रारंभ
3.	दि.	24.12.93	बुधवार	मोक्षदा एकादशी, व्रत

PUBLISHED BY SADHU MUKUNDJIVANDAS FOR YOGI DIVINE SOCIETY,
A 103, Ashok vihar-III, Swaminarayan Marg, Kakaji Lane,
Delhi-110 052. (India) Tel. : 7229327, 7249327
Printed at R.P. Printers, Shahdara, Delhi-110 032